सुखना और सौज झील: भारत के रामसर स्थलों की संख्या 103

GS-3 पर्यावरण एवं जैवविविधता | प्रारंभिक परीक्षा | समाचार संदर्भ: 15 अक्टूबर 2026 | प्रकाशित: 19 अक्टूबर 2026

खबरों में क्यों

सुखना आर्द्रभूमि और सौज झील को अंतरराष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमियों की रामसर सूची में शामिल किया गया है। रामसर सचिवालय और पर्यावरण मंत्रालय की 15 अक्टूबर 2026 की जानकारी के अनुसार इन दोनों के जुड़ने से भारत के रामसर स्थलों की संख्या 103 हो गई। यह संख्या उस तारीख का संदर्भ है। दोनों स्थल जलपक्षियों और स्थानीय पारिस्थितिकी के लिए महत्त्वपूर्ण हैं, लेकिन उनकी प्रकृति और प्रबंधन की चुनौतियाँ समान नहीं हैं।

पहले बुनियादी बातें

रामसर स्थलअंतरराष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमियों की सूची में शामिल स्थल। यह पहचान संरक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग के प्रयास को महत्त्व देती है।

जलग्रहण क्षेत्रवह आसपास का भूभाग जहाँ से पानी और उसके साथ मिट्टी या अन्य पदार्थ किसी जलाशय में आते हैं।

पारिस्थितिक संपर्कअलग आवासों के बीच ऐसा संबंध जिससे जीवों की आवाजाही और प्राकृतिक प्रक्रियाएँ बनी रहती हैं।



आरेख: रामसर सचिवालय के स्थल-विवरण पर आधारित pcsmantra.com का मौलिक तुलना-चित्र।

सुखना आर्द्रभूमि: शहर के पास जलाशय

सुखना आर्द्रभूमि चंडीगढ़ शहर के किनारे और बाह्य हिमालय की तलहटी में स्थित है। रामसर सूची में इसकी स्थल संख्या 2602 है। यह शहर के समीप का जलाशय है, जो आसपास के जलग्रहण से आने वाले पानी और तलछट के प्रवाह को विनियमित करने में भूमिका निभाता है। यहाँ जलस्तर मौसमी रूप से बदलता है। खुले पानी, किनारे की

वनस्पति, झाड़ियों और वन जैसे अलग आवास मिलते हैं।

यह निवासी जलपक्षियों और मध्य एशियाई उड़ान-पथ से आने वाले प्रवासी पक्षियों को भोजन, प्रजनन, विश्राम और शीतकालीन आवास देता है। सचिवालय ने कॉमन पोचार्ड (Aythya ferina), पल्लास फिश ईगल (Haliaeetus leucoryphus) और ब्लैक पॉन्ड टर्टल (Geoclemys hamiltonii) जैसी प्रजातियों का उल्लेख किया है। इसे केवल पर्यटक-झील समझना इसके आवासीय महत्त्व को छोटा कर देता है।

सौज झील: खेती के बीच उथली आर्द्रभूमि

उत्तर प्रदेश की सौज झील की रामसर स्थल संख्या 2603 है। यह गंगा के बाढ़-मैदान में खेतों से घिरी उथली झील है। बड़े आर्द्रभूमि-जाल का हिस्सा होने के कारण यह व्यापक परिदृश्य में पारिस्थितिक संपर्क बनाए रखने में योगदान देती है। यह समान पक्षी अभयारण्य के निकट है, जो पहले से रामसर स्थल संख्या 2413 है। सौज और समान अलग स्थल हैं; नाम या निकटता के कारण उन्हें एक नहीं मानना चाहिए।

झील नियमित रूप से 30,000 से अधिक जलपक्षियों को सहारा देती है। रामसर सचिवालय के अनुसार इसे BirdLife International ने महत्त्वपूर्ण पक्षी एवं जैवविविधता क्षेत्र (IBA) भी पहचाना है। यहाँ सारस क्रेन (Grus antigone), ग्रेटर स्पॉटेड ईगल (Clanga clanga), कमल (Nelumbo nucifera) और जंगली गन्ने की प्रजाति Saccharum spontaneum का उल्लेख मिलता है। प्रजातियों की सूची के साथ उनके आवास की निरंतरता समझना जरूरी है।

दोनों स्थलों की चुनौतियाँ अलग क्यों?

- सुखना में जलग्रहण से आने वाली तलछट और आक्रामक प्रजातियों का नियंत्रण प्रमुख प्रबंधन मुद्दे हैं। सचिवालय के अनुसार कटाव घटाने के लिए मिट्टी एवं नमी संरक्षण और आक्रामक पौधों को समय-समय पर हटाने जैसे उपाय प्रबंधन योजना में हैं।
- सौज झील के लिए मछली पकड़ने पर मौसमी रोक, बहुत महीन जालों के उपयोग पर प्रतिबंध और मवेशियों के प्रवेश का नियंत्रण प्रस्तावित प्रबंधन उपाय हैं। प्रस्तावित उपाय और पहले से लागू प्रतिबंध अलग स्थितियाँ हैं।
- दोनों उदाहरण बताते हैं कि आर्द्रभूमि के प्रबंधन में केवल पानी वाला भाग नहीं, जलग्रहण, आसपास की खेती, वनस्पति और स्थानीय उपयोग भी देखने पड़ते हैं।

रामसर पहचान से आगे क्या करना होगा?

रामसर की विवेकपूर्ण उपयोग की अवधारणा सतत विकास के संदर्भ में पारितंत्र दृष्टिकोण से पारिस्थितिक स्वरूप बनाए रखने पर बल देती है। इसका अर्थ सभी मानवीय उपयोग बंद करना या किसी भी उपयोग की खुली छूट देना नहीं है। जलपक्षियों के आवास, जलप्रवाह और स्थानीय आजीविका के बीच स्थल-विशिष्ट संतुलन चाहिए। सूची में शामिल होना अपने आप तलछट, प्रदूषण या आक्रामक प्रजातियों की समस्या समाप्त नहीं करता।

संरक्षण की सफलता कैसे आँकें?

स्थलों की राष्ट्रीय संख्या उपलब्धि का एक संकेत है; वास्तविक सफलता के लिए जलस्तर की मौसमी प्रकृति, आवासों की स्थिति, पक्षियों के उपयोग और प्रबंधन उपायों का परिणाम देखना होगा। केवल अधिक पानी भरना हर आर्द्रभूमि के लिए सुधार नहीं है, क्योंकि उथले और मौसमी आवास भी महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं। स्थानीय समुदाय को साझेदार बनाकर निगरानी और उपयोग-नियम तय करना अधिक टिकाऊ रास्ता होगा। यह नीतिगत विश्लेषण है, किसी नए सरकारी आदेश का विवरण नहीं।

प्रारंभिक परीक्षा: याद रखने योग्य तथ्य

- 15 अक्टूबर 2026 की घोषणा के अनुसार भारत के रामसर स्थल 103 हुए।
- **सुखना:** चंडीगढ़; रामसर स्थल 2602; शहर के समीप जलाशय और बाह्य हिमालय की तलहटी का संदर्भ।
- **सौज:** उत्तर प्रदेश; रामसर स्थल 2603; गंगा के बाढ़-मैदान की उथली झील।
- सौज के निकट समान पक्षी अभयारण्य अलग रामसर स्थल 2413 है।
- सुखना में तलछट और आक्रामक प्रजातियाँ; सौज में मत्स्य-पकड़ के तरीके और पशु-प्रवेश जैसे प्रबंधन मुद्दे।
- रामसर सूची की पहचान, IBA पहचान और वास्तविक प्रबंधन-परिणाम अलग बातें हैं।

मुख्य परीक्षा: उत्तर की रूपरेखा

- **परिचय:** दो नए स्थलों और 15 अक्टूबर के 103 स्थलों के आँकड़े को संक्षेप में रखें।
- **तुलना:** सुखना के शहर-समीप जलाशय तथा सौज की बाढ़-मैदानी उथली झील के आवास और जलपक्षी-महत्त्व को जोड़ें।
- **विश्लेषण:** जलग्रहण, तलछट, आक्रामक प्रजातियाँ और स्थानीय उपयोग के अनुसार अलग प्रबंधन उपाय समझाएँ। प्रस्ताव को लागू उपलब्धि न बताएँ।
- **निष्कर्ष:** सूची की संख्या से आगे पारिस्थितिक स्वरूप, समुदाय की भागीदारी और परिणाम-आधारित निगरानी पर बल दें।

मुख्य परीक्षा अभ्यास: आर्द्रभूमि का अंतरराष्ट्रीय महत्त्व मान लेना और उसका प्रभावी संरक्षण करना अलग चरण हैं। सुखना आर्द्रभूमि और सौज झील के उदाहरण से विवेचना कीजिए। (250 शब्द, 15 अंक)

संबंधित अध्ययन: आर्द्रभूमि संरक्षण: नक्शे से पारिस्थितिक प्रबंधन तक

स्रोत

रामसर सचिवालय: दो नए भारतीय स्थलों का विवरण, 15 अक्टूबर 2026

पर्यावरण मंत्रालय, PIB: भारत के रामसर स्थलों की संख्या 103, 15 अक्टूबर 2026

रामसर सचिवालय: आर्द्रभूमियों का विवेकपूर्ण उपयोग